अमर उजाला

18.12.2018

एफआरआई का सिल्वीकल्चर संग्रहालय जनता के लिए खुला

संग्रहालय में वानिकी के विकास व ऐतिहासिक घटनाओं का खाका खींचा : सिद्धांत दास

अमर उजाला ब्यूरो

देहरादून। वन एवं पर्यावरण मंत्रालय के विशेष सचिव सिद्धांत दास ने सोमवार को वन अनुसंधान परिसर में सिल्वीकल्चर संग्रहालय गैलरी का उद्घाटन किया। इस मौके पर सिद्धांत दास ने कहा कि इस आधुनिक संग्रहालय के जरिए देश में वानिकी के विकास और ऐतिहासिक घटनाओं का खाका खींचा गया है। वन संवर्द्धन संग्रहालय के माडल में वनों से जुड़े सामाजिक, आर्थिक और पारिस्थितिकीय पहलुओं पर रोचक जानकारी दी गई है।

वन संवर्धन संग्रहालय गैलरी को निहारते वन महानिदेशक सिद्धांत दास साथ में एफआरआई निदेशक डॉ. सविता। अमर उजाला

सिद्धांत दास ने कहा कि संग्रहालय के माध्यम से छात्र व आमजन को वनों से जुड़े तथ्यों की जानकारी मिलेगी। माडलों से विभिन्न वनों के पारिस्थितिकी तंत्र व जैव विविधता को समझाने का प्रयास किया है। उन्होंने कहा कि इससे लोग पर्यावरण को संतुलित रखने में वनों के महत्व को समझेंगे और पौधरोपण के प्रति रुझान बढ़ेगा। सिल्वीकल्चर गैलरी के पैनलों में वनों की कटाई, वनाग्नि, प्रतिकूल जलवायु कारक, आक्रामक संयंत्र, स्थानांतरण व कीटों से जंगलों पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों को भी रेखांकित किया है। एफआरआई की निदेशक डा. सविता ने बताया कि भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय ने सिल्वीकल्चर संग्रहालय गैलरी को पुनर्निर्मित किया है। उद्घाटन के बाद इस संग्रहालय को आम जनता के लिए खोल दिया है। इस मौके पर महानिदेशक डा. एससी गैरोला, वन विभाग के अधिकारी, वैज्ञानिक, आईसीएफआरआई, आईजीएनएफए, आईएसडब्ल्यूसी, डब्ल्यूआईआई, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय व विभिन्न संगठनों के प्रतिनिधि मौजूद थे।

संग्रहालय की विशेषता

दुनिया का सबसे पुराना वन्य जर्नल द इंडियन फारेस्टर व अन्य प्रकाशन को रचनात्मक तरीके से दिखाया है। शो केस में नर्सरी टूल्स और एक्सेसरीज, मैन्सेरेशन टूल्स, राक नमूनों, वन फलों के साथ-साथ कटाई के उपकरण प्रदर्शित किए हैं। वनों में लगने वाली आग की निगरानी के लिए बना माडल भी लोगों के आकर्षण का केन्द्र बनेगा।

दैनिक जागरण
18.12.2018

संग्रहालय वानिकी विकास में मील का पत्थर

वन महानिदेशक सिद्धांत दास ने एफआरआइ में सिल्विकल्चर संग्रहालय गैलरी का किया उद्घाटन

जागरण संवाददाता, देहरादून : वन महानिदेशक व विशेष सचिव पर्यावरण एवं वन मंत्रालय सिद्धांत दास ने वन अनुसंधान संस्थान (एफआरआइ) में पुनर्निर्मित सिल्विकल्चर संग्रहालय गैलरी का उद्घाटन किया। इस मौके पर उन्होंने कहा कि एफआरआइ की आधुनिक संग्रहालय गैलरी आगंतुकों को भारत में वानिकी के विकास और ऐतिहासिक घटनाओं को समझाने में मील का पत्थर साबित होगी। कहा कि इस अत्याधुनिक संग्रहालय गैलरी में पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं, जैव विविधता को समझने के लिए विभिन्न प्रकार के जंगलों के महत्व पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

सोमवार को पत्रकारों से वार्ता करते हुए सिद्धांत दास ने कहा कि संग्रहालय गैलरी के विभिन्न पैनलों में दी गई जानकारी से संस्थान के भ्रमण पर आने वालों को लाभ मिलेगा। साथ ही वानिकी के विभिन्न पहलुओं की भी जानकारी मिलेगी। उन्होंने कहा कि सिल्विकल्चर वनों की स्थापना, संरचना, संविधान और विकास को नियंत्रित करने का सिद्धांत और अभ्यास है। आइसीएफआरआइ के महानिदेशक डॉ. एससी गैरोला ने सिल्विकल्चर संग्रहालय गैलरी के आधुनिकीकरण कार्यों की संकल्पना और निष्पादित करने के लिए एफआरआइ द्वारा किए गए प्रयासों की सराहना की। समारोह में एफआरआइ के सभी विशेषज्ञ शिक्षकों ने प्रतिभाग किया।

वन अनुसंधान संस्थान में पुनर्निर्मित सिल्विकल्चर संग्रहालय गैलरी के उद्घाटन के बाद गैलरी का अवलोकन करते वन महानिदेशक सिद्धांत दास व एफआरआइ की निदेशक डॉ. सविता।

शैक्षणिक भूमिका को लेते हैं गंभीरता से : डॉ. सविता

एफआरआइ की निदेशक डॉ. सविता ने कहा कि हम अपनी शैक्षणिक भूमिका गंभीरता से लेते हैं। उम्मीद है कि एफआरआइ में आने वाले छात्र और अन्य विजीटर संग्रहालय के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण व जंगलों की भूमिका के बारे में बेहतर जानकारी प्राप्त करेंगे। साथ ही देश में पर्यावरण संरक्षण में अग्रणी भूमिका निभाएंगे। सिल्विकल्चर संग्रहालय गैलरी रचनात्मक रूप से डिजाइन की गई है। जिसमें सूचनात्मक पैनलों के माध्यम से भारत में वानिकी के विकास, वनों के महत्व, वनों की कटाई, वन अग्नि, स्थानांतरण खेती, प्रतिकूल जलवायु कारक, कीट और रोगों से जंगलों के लिए खतरे को दर्शाया गया है।

दून दर्पण
18.12.2018

रिबन काटकर उदघाटन करते हुए सिद्धांत दास व अन्य । छाया दर्पण

वन अनुसंधान संस्थान में नवीनीकृत और आधुनिकीकृत वन संवर्धन संग्रहालय गैलरी का उद्घाटन

देहरादून 17 दिसम्बर(**दर्पण संवाददाता**)। सिद्धान्त दास,वन महानिदेशक एवं विशेष सचिव, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय ने डॉ एससी गैरोला, महानिदेशक और एफआरआई के निदेशक डॉ सविताकी उपस्थिति मेंवन अनुसंधान संस्थान, देहरादून के पुनर्निर्मित सिल्विकल्चर संग्रहालय गैलरी का उद्घाटन किया।

इस अवसर पर संग्रहालय गैलरी का नवीनीकरण और आधुनिकीकरण कार्य संस्कृति मंत्रालय, भारतसरकार द्वारा वित्त पोषित किया गया है। इसउद्घाटन मेंएफआरआई के विभागों के सभी प्रमुखों और वैज्ञानिकों ने भाग लिया था; इसके अतिरिक्तआईसीएफआरई से डीडीजी, एडीजी; आईजीएनएफए, कैसफोस आईएसडब्ल्यूसी डब्ल्यूआई आई, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय के क्षेत्रीय कार्यालय और भारत सरकार के विभिन्न संगठनों के प्रतिनिधियों और उत्तराखंड राज्य वन विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों ने शिरकत की।

इस अवसर पर मीडिया कर्मियों को संबोधित करते हुए सिद्धांत दास ने जोर दिया कि आधुनिक संग्रहालय गैलरी आगंतुकों को भारत में वानिकी के विकास और ऐतिहासिक घटनाओं को समझाने में सहायता करेगी। उन्होंने आगे कहा कि इस संग्रहालय में पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं, जैव विविधता के समर्थन के लिए विभिन्न प्रकार के जंगलों के महत्व पर ध्यान केंद्रित किया गया है। उन्होंने निदेशक एफआरआई और उनकी टीम को उनके अद्भुत और अथक प्रयासों के लिए बधाई दी। उन्होंने कहा कि विभिन्न पैनलों में दी गई जानकारी से आगंतुकों को अत्यधिक लाभ होगा और वानिकी के विभिन्न पहलुओं पर भी शिक्षित किया जाएगा।

इस अवसर पर सिद्धान्त दास ने अपने बयान में यह भी समझाया कि सिल्विकल्चर वनों की स्थापना, संरचना, संविधान और विकास को नियंत्रित करने का सिद्धांत और अभ्यास है। आई सी एफ आर ई के महानिदेशक डॉ एस सी गैरोला ने सिल्विचल्चर संग्रहालय गैलरी के आधुनिकीकरण कार्यों को संकल्पना और निष्पादित करने के लिए डॉ सविता के नेतृत्व में एफआरआई द्वारा किए गए प्रयासों की सराहना की।

एफआरआई के निदेशक डॉ सविता ने कहा कि हम अपनी शैक्षणिक भूमिका बहुत गंभीरता से लेते हैं और हमें उम्मीद है कि एफआरआई मेंआनेवाले छात्र और अन्य आगंतुक इस संग्रहालय के माध्यम से पर्यावरण को बचाने में जंगलों की भूमिका के बारे में बेहतर जानकारी प्राप्तकरेंगेऔर हमारे पृथ्वीको हरित करने की दिशा में योगदान देने के लिए प्रेरित होंगे तथाअधिक पेड़ लगाने में योगदान करेंगे।

इस अवसर पर सिल्विकल्चर संग्रहालय गैलरी रचनात्मक रूप से डिज़ाइन किए गए सूचनात्मक पैनलों के माध्यम से भारत में वानिकी के विकास, वनों के महत्व, वनों की कटाई, वन अग्नि, स्थानांतरण खेती, आक्रामक संयंत्र, प्रतिकूल जलवायु कारक, कीट कीट और रोगों के जंगलों के लिए खतरे का प्रदर्शन करती है। इसमें संगठित वन प्रबंधन के लिए कार्य योजनाओं की तैयारी और कार्यान्वयन के साथ वानिकी में किए गए उपलब्धियों पर भी प्रकाश डाला गया है।

इस अवसर पर संग्रहालय में वनों के कामकाज और संचालन के विभिन्न मॉडलों के साथ–साथ उष्ण कटिबंधीय और तापमान क्षेत्र, सिल्विकिकल्चर सिस्टम्स, पारिस्थितिकी तंत्र और सतत वन प्रबंधन के वनों के साथ–साथ वनों के कामकाज और संचालन के बारे में भी जानकारी दी गयी है। विभिन्न मॉडलों के साथ–साथ विभिन्न डायरामास भी प्रदर्शित किए गए हैं। सामाजिक, आर्थिक और पारिस्थितिकीय पहलुओं के बीच संबंधों के संदर्भ में वानिकी के आयामों को दिखाते हुए एक बहुत ही रोचक पैनल प्रस्तुत किया गया है। अन्य कोने में एक बहुत ही कलात्मक और रचनात्मक तरीके से प्रस्तुत सभी महत्वपूर्ण प्रकाशन प्रदर्शित किये गए हैं। 'द इंडियन फॉरेस्टर',जो दुनिया में तीसरा सबसे पुराना वन्य जर्नल है,के बदलतेचेहरों के लिए समर्पित एक शेल्फ है । नर्सरी टूल्स और एक्सेसरीज़, मैन्सरेशन टूल्स, रॉक नमूनों, वन फलों के साथ–साथ कटाई, काटने और निष्कर्षण उपकरण प्रदर्शित करने वाले शोकेस भी हैं। मॉडलों में वन अग्नि निगरानी प्रणाली पर भी एक मॉडल है जो संग्रहालय का दौरा करने वाले लोगों के लिए आकर्षित करेगा। आज आपचारिक उद्घाटन के बाद पुनर्निर्मित सिल्विकल्चर संग्रहालय आम जनता के लिए खोल दिया गया है।

I-NEXT

18-12-2018

एफआरआई में विजिटर्स के लिए खुला मॉडर्न म्यूजियम

PIC: DAINIK JAGRAN I NEXT

DEHRADUN (17 Dec): एफआरआई में नवीनीकृत और आधुनिक वन संवर्धन संग्रहालय में मॉडर्न गैलरी का इनॉग्रेशन हुआ. इसके बाद यह संग्रहालय औपचारिक तौर पर विजिटर्स के लिए खोल दिया गया है. शुभारंभ अवसर पर बताया गया कि यह संग्रहालय वानिकी के विकास एवं ऐतिहासिक घटनाओं को समझाने में मददगार होगा. सोमवार को एफआरआई मेन बिल्डिंग में पर्यावरण एवं नव मंत्रालय के विशेष सचिव सिद्धांत दास ने संग्रहालय का शुभारंभ किया. इस मौके पर दास ने बताया कि इस संग्रहालय में पारिस्थितिक तंत्र सेवाओं, जैव विविधता के समर्थन के लिए विभिन्न प्रकार के जंगलों के महत्व पर ध्यान केंद्रित किया गया है. आईसीएफआरई के महानिदेशक डा. एससी गैरोला ने सिल्विकल्चर संग्रहालय गैलरी के आधुनिकीकरण कार्यों को संकल्पना और निष्पादित करने के लिए डा. सविता के नेतृत्व में एफआरआई की ओर से किए गए प्रयासों की सराहना की. एफआरआई की निदेशक डॉ. सविता ने कहा हमें उम्मीद है कि एफआरआई में आने वाले छात्र और अन्य विजिटर्स इस संग्रहालय के माध्यम से पर्यावरण को बचाने में जंगलों की भूमिका के बारे में बेहतर जानकारी प्राप्त सकेंगे.

राष्ट्रीय सहारा
18.12.2018

एफआरआई में वन संवर्द्धन गैलरी का उद्घाटन करते वन महानिदेशक सिद्धांत दास व अन्य।

जनता के लिए खुला वन संवर्द्धन संग्रहालय

भारत सरकार के कार्य संस्कृति मंत्रालय से प्राप्त वित्त से किया गया पुनर्निर्माण

वन महानिदेशक सिद्धांत दास ने किया वन संवर्द्धन गैलरी का उद्घाटन

■ सहारा न्यूज ब्यूरो

देहरादून।

वन अनुसंधान संस्थान (एफआरआई) में पुनर्निर्मित आधुनिक सिल्वीकल्चर वन संवर्द्धन संग्रहालय आम जनता के लिए खुल गया है। सोमवार को वन महानिदेशक व वन एवं पर्यावरण मंत्रालय के विशेष सचिव सिद्धांत दास ने संग्रहालय का उद्घाटन किया। संग्रहालय का पुनर्निर्माण भारत सरकार के कार्य संस्कृति मंत्रालय से प्राप्त वित्तीय सहयोग से किया गया है।

इस अवसर पर पर वन महानिदेशक सिद्धांत दास ने कहा कि आधुनिक वन संवर्धन संग्रहालय गैलरी आगंतुकों को भारत में वानिकी के विकास और ऐतिहासिक घटनाओं को समझाने में सहायता करेगी। संग्रहालय में पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं व जैव विविधता के समर्थन के लिए विभिन्न प्रकार के जंगलों के महत्व पर ध्यान केंद्रित किया गया है। उन्होंने एफआरआई की निदेशक व उनकी टीम को उनके प्रयासों के लिए बधाई दी। कहा कि विभिन्न पैनलों में दी गई जानकारी से आगंतुकों को अत्यधिक लाभ होगा और वानिकी के विभिन्न पहलुओं की भी जानकारी मिलेगी।

उन्होंने कहा कि सिल्वीकल्चर वनों की स्थापना, संरचना, संविधान और विकास को नियंत्रित करने का सिद्धांत और अभ्यास है। भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद (आईसीएफआरई) के महानिदेशक डा. एससी गैरोला ने भी सिल्वीचल्चर संग्रहालय गैलरी के आधुनिकीकरण कार्यों को निष्पादित करने के लिए निदेशक डा. सविता के नेतृत्व में एफआरआई की टीम द्वारा किए गए प्रयासों की सराहना की। एफआरआई की निदेशक डा. सविता ने कहा कि हम अपनी शैक्षणिक भूमिका को गंभीरता से लेते हैं। उम्मीद है कि एफआरआई में आने वाले छात्र, शोधार्थी व आगंतुक इस संग्रहालय के माध्यम से पर्यावरण बचाने में जंगलों की भूमिका के बारे में बेहतर जानकारी प्राप्त करेंगे। सिल्वीकल्चर संग्रहालय गैलरी रचनात्मक रूप से डिजाइन किए गए सूचनात्मक पैनलों के माध्यम से भारत में वानिकी के विकास, वनों के महत्व, वनों की कटाई, वनाग्नि, स्थानांतरण खेती, आक्रामक संयंत्र, प्रतिकूल जलवायु कारक, कीट और कीट रोगों के जंगलों के लिए खतरे का प्रदर्शन करती है।

इसमें संगठित वन प्रबंधन के लिए कार्य योजनाओं की तैयारी और कार्यान्वयन के साथ वानिकी में किए गए उपलब्धियों पर भी प्रकाश डाला गया। इस अवसर पर संस्थान के सभी विभागों के प्रमुख, वन वैज्ञानिक व कार्मिक भी उपस्थित रहे।

हिन्दुस्तान
18.12.2018

म्यूजियम में जानिए वनों के विकास की कहानी

वन विभाग

देहरादून | कार्यालय संवाददाता

उत्तराखंड वन संपदा के जरिए जैव विविधता और पर्यावरण संरक्षण में विशेष योगदान दे रहा है। ऐसे में राज्य को ग्रीन बोनस मिलना चाहिए।

सोमवार को केंद्रीय वन मंत्रालय के विशेष सचिव और डीजी फारेस्ट सिद्धांत दास गुप्ता ने वन अनुसंधान संस्थान (एफआरआई) में सिल्वीकल्चर म्यूजियम के उद्घाटन के अवसर पर ये बात कही। इस म्यूजियम की खासियत ये है कि इसमें 1806 से अब तक भारत में वनों के विकास को चित्रों, वानिकी टूल्स, लेख और अन्य तरह से दिखा गया है। उन्होंने केंद्र की ओर से फॉरेस्ट फायर के लिए खास नीति बनाने की भी बात कही। कहा कि जंगलों से निकलने वाले पानी को वहीं रोकने के लिए काम करना होगा। इससे फॉरेस्ट फायर, भूस्खलन रोकने और जंगल घने होने में विशेष मदद मिलेगी। एफआरआई की डायरेक्टर डा. सविता ने बताया कि ये पुराना म्यूजियम 1929 में बना था। जिसमें उस वक्त के हिसाब से सिर्फ जंगल बढ़ाने की तकनीक और उसके विकास को दिखाया गया था। लेकिन नए म्यूजियम में आज के समय के अनुसार बदलाव किए गए हैं। इसमें फॉरेस्ट मैनेजमेंट को बखूबी दिखाया गया है। संस्कृति मंत्रालय ने इसके आधुनिकीकरण के लिए बजट दिया है। उद्घाटन कार्यक्रम में आईसीएफआरई के निदेशक डा. एससी गैरोला, सीसीएफ पीके पात्रो, डा. रुचि बडोला मौजूद रहे।

म्यूजियम में छात्रों के लिए खास जानकारी

देहरादून। इस म्यूजियम में आने के बाद आप जान सकेंगे कि देश में कैसे और कितना वनों का विकास हुआ। इससे ये भी जानकारी मिलेगी कि कैसे 1988 तक वानिकी में बड़े बदलाव आए और लगातार वनों का विकास आज भी जारी है। ये म्यूजियम फॉरेस्ट्री, एग्रीकल्चर और विज्ञान के छात्रों के लिए भी जानकारी परक है।

हटा दी बाघ की ट्रॉफी : पुराने म्यूजियम में बाघ की एक बड़ी ट्रॉफी (खाल में फूसा भरी) भी थी। जो कि नए म्यूजियम में हटा दी गई है।

म्यूजियम की खासियत : कार्बन स्टाकिंग, वनों से रोजगार, पर्यावरण और जैव विविधता संरक्षण की थीम, देश के सभी राज्यों के राज्य पुष्प और राज्य वृक्ष को काफी आकर्षक दिखाया गया है, आर्टिफिशियल जंगल और उसमें बर्ड वाचिंग के लिए एलईडी स्क्रीन लगाई गई है

एफआरआई में सोमवार को म्यूजियम का उद्घाटन किया गया। ● हिन्दुस्तान

प्राकृतिक रंगों से किया गया चित्रण: म्यूजियम में हाथों से तैयार चित्रों के जरिये बीज से पौधा बनने की प्रक्रिया दिखाई गई है। खासियत ये है कि इसमें जड़, तने और पत्ते में रंग भरने के लिए पेड़ों से ही प्राकृतिक रंग तैयार किया गया है। ये चित्र काफी आकर्षक है।

शाह टाईम्स
18.12.2018

विशेष सचिव पर्यावरण दास ने एफआरआई के प्रयासों को सराहा

नवीनीकृत और आधुनिकीकृत वन संवर्धन संग्रहालय गैलरी का उद्घाटन

▸▸ अधिक से अधिक पेड़ लगाने का आह्वान

शाह टाइम्स संवाददाता

देहरादून। महानिदेशक एव विशेष सचिव, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय सिद्धांत दास, डॉ एससी गैरोला, महानिदेशक और एफ़आरआई के निदेशक डॉ सविता की उपस्थिति म वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून के पुनर्निर्मित सिल्विकल्चर संग्रहालय गैलरी का उद्घाटन हुआ।

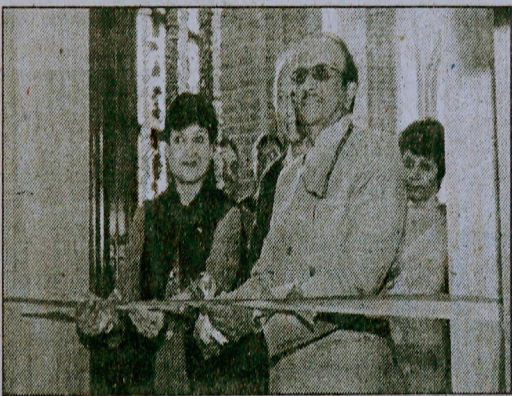

संग्रहालय गैलरी का नवीनीकरण और आधुनिकीकरण कार्य संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा वित्त पोषित किया गया है। इस उद्घाटन में एफआरआई के विभागों के सभी प्रमुखों और वैज्ञानिकों ने भाग लिया थाय इसके अतिरिक्त आईसीएफआरई से डीडीजीए एडीजीय आईजीएनएफएए आईएसडब्ल्यूसीए डब्ल्यूआईआईए पर्यावरण एवं वन मंत्रालय के क्षेत्रीय कार्यालय और भारत सरकार के विभिन्न संगठनों के प्रतिनिधियों और उत्तराखंड राज्य वन विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों ने शिरकत की।

मीडिया कर्मियों को संबोधित करते हुए सिद्धांत दास ने जोर दिया कि आधुनिक संग्रहालय गैलरी आगंतुकों को भारत में वानिकी के विकास और ऐतिहासिक घटनाओं को समझाने में सहायता करेगी। उन्होंने आगे कहा कि इस संग्रहालय में पारिस्थिति की तंत्र सेवाओं, जैव विविधता के समर्थन के लिए विभिन्न प्रकार के जंगलों के महत्व पर ध्यान केंद्रित किया गया है। उन्होंने निदेशक एफआरआई और उनकी टीम को उनके अद्भुत और अथक प्रयासों के लिए बधाई दी। उन्होंने कहा कि विभिन्न पैनलों में दी गई जानकारी से आगंतुकों को अत्यधिक लाभ होगा और वानिकी के विभिन्न पहलुओं पर भी शिक्षित किया जाएगा। सिद्धान्त दास ने अपने बयान में यह भी समझाया कि सिल्विकल्चर वनों की स्थापना, संरचना, संविधान और विकास को नियंत्रित करने का सिद्धांत और अभ्यास है। आईसीएफआरई के महानिदेशक डॉ एस सी गैरोला ने सिल्विचल्चर संग्रहालय गैलरी के आधुनिकीकरण कार्यों को संकल्पना और निष्पादित करने के लिए डॉ सविता के नेतृत्व में एफआरआई द्वारा किए गए प्रयासों की सराहना की एफआरआई के निद. ेशक डॉ सविता ने कहा कि हम अपनी शैक्षणिक भूमिका बहुत गंभीरता से लेते हैं और हमें उम्मीद है कि एफआरआई में आने वाले छात्र और अन्य आगंतुक इस संग्रहालय के माध्यम से पर्यावरण को बचाने में जंगलों की भूमिका के बारे में बेहतर जानकारी प्राप्त करेंगे और हमारे पृथ्वी को हरित करने की दिशा में योगदान देने के लिए प्रेरित होंगे तथा अधिक पेड़ लगाने में योगदान करेंगे।

THE PIONEER
18-12-2018

Renovated Silviculture museum opened at FRI

Focus now on importance of different forest types for ecosystem services & biodiversity support: Forests DG

PNS ■ DEHRADUN

The renovated silviculture museum at Forest Research Institute (FRI) was inaugurated by the director general of forests and special secretary, Ministry of Environment, Forests and Climate Change, Siddhanta Das on Monday.

Speaking on the occasion, Das said that the modernised museum gallery will enable visitors to understand the evolution and historic events of forestry in India.

He further added that focus is now on the importance of different types of forests for ecosystem services and biodiversity support in our life. He said that the visitors would be benefitted by the information provided in various panels and would also get educated on various aspects of forestry.

Indian Council of Forestry Research and Education (ICFRE) director general SC Gairola appreciated the conceptualisation and execution of modernisation of the silviculture museum gallery.

FRI director Savita said that the institute takes its educational role very seriously and hopes the students and other visitors FRI will be better informed about the role of forests in saving the environment and be inspired to plant more trees.

It should be mentioned here that the modernisation work has been funded by the Ministry of Culture. The silviculture museum gallery showcases the evolution of forestry in India, importance of forests, threats to forests like deforestation, forest fire, shifting cultivation, invasive plants, adverse climatic factors, insect pests and diseases through creatively designed informative panels.

It also highlights the accomplishments made in forestry along with the preparation and implementation of working plans for organised forest management.

The museum also has various diorama depicting the forests of tropical and temperate region, silviculture systems, ecosystem services and sustainable forest management along with different samples of seeds, roots, barks along with various models on forestry working and operations.

It also contains a panel showing the dimensions of forestry especially in terms of relationship between social, economic and ecological facets.

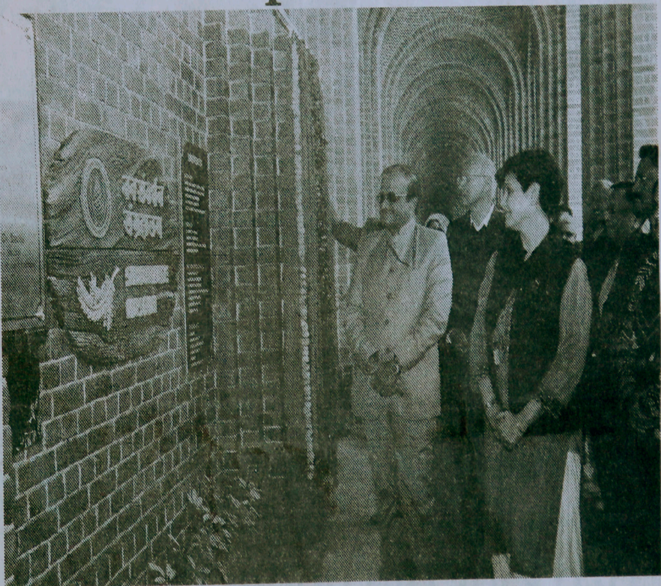

The other corner has all the important publications presented in a creative manner. There is one shelf devoted to changing faces of 'The Indian Forester' the third oldest forestry journal in the world being brought about by FRI uninterruptedly since 1875. There are showcases exhibiting nursery tools and accessories, mensuration tools, rock samples, forest fruits as well as harvesting, pruning and extraction implements.

Among the models there is also one on forest fire surveillance systems.

उत्तराखण्ड केसरी
18.12.2018

केंद्रीय वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन के विशेष सचिव ने किया उद्घाटन

एफआरआई में वर्ल्ड क्लास म्यूजियम गैलरी शुरू

देहरादून, 17 दिसंबर (स.ह.) : भारतीय वन अनुसंधान संस्थान की म्यूजियम गैलरी को अपग्रेड किया गया है। सोमवार को केंद्रीय वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के विशेष सचिव सिद्धांत दास ने इसका उद्घाटन किया। इस मौके पर उन्होंने कहा कि इस विश्वस्तीय म्यूजियम गैलरी का फायदा हर उस शख्स को मिलेगा, जो वन एवं पयार्वरण के बारे में रुचि रखता है। आईसीएफआरई के महानिदेशक एससी गैरोला ने म्यूजियम को उपयोगी बताते हए इसके प्रचार पर जोर दिया। संस्थान की निदेशक डॉ. सविता ने कहा कि नवउद्घाटित गैलरी बेहद ज्ञानवर्द्धक है और इसमें सूचनाओं का संसार है।

संस्थान के सिल्वीकल्चर डिवीजन की अध्यक्ष डॉ. आरती चौधरी, डॉ. दिनेश कुमार, डॉ. आरथंगा पांडियान, डॉ. केपी सिंह, एसआर रेड्डी, डॉ. अमित वर्मा, वीके धवन, ओमबीर सिंह समेत वरिष्ठ वैज्ञानिक इस मौके पर मौजूद रहे।

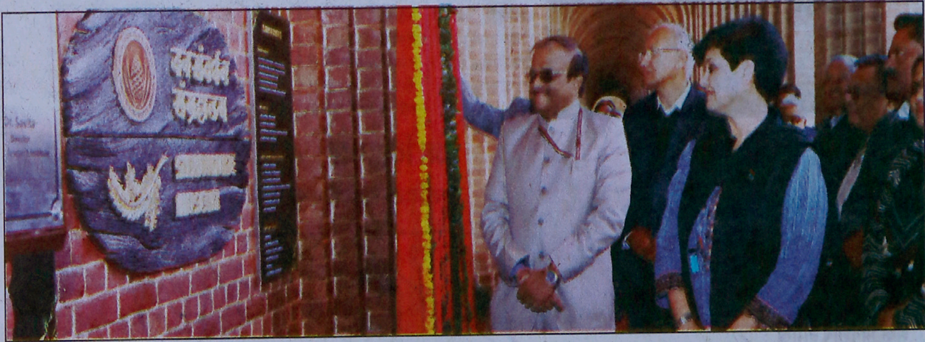

वन संबंधी जानकारियों का संसार समेटे है म्युजियम गैलरी

देहरादून, 17 दिसंबर (स.ह.) : एफआरआई की अपग्रेड की गई म्यूजियम गैलरी में विभिन्न राज्यों में मौजूद पेड़ों की दशा की जानकारी दी गई है। साथ ही प्रदेशों के फूलों के बारे में भी सूचनाएं हैं। वनपाल के कार्य, आधुनिक पौधशाला, भारत में वानिकी के विकास, भारतीय वन अनुसंधान संस्थान का शोध कार्य आदि की जानकारी भी इसमें हैं। सभी सूचनाएं डिजिटाइज़ की गई हैं। वानिकी में एफआरआई की छाप, वानिकी से नदियों का जीर्णोद्दार, वनोपज का आकलन, भारतीय वानिकी का विस्तार, टिकाऊ वानिकी, वनों पर व्याप्त खतरों, जलवायु परिवर्तन आदि को मॉडल के जरिए दर्शाया गया है। यहां पर लगाया गया कृत्रिम वृक्ष आकर्षण का केंद्र है।

उत्तराखण्ड केसरी
18.12.2018

उत्तराखंड को हर हाल में मिले ग्रीन बोनसः दास

देहरादून, 17 दिसंबर (स.ह.) : केंद्रीय वन एवं पयार्वरण मंत्रालय के विशेष सचिव सिद्धांत दास का कहना है कि उत्तराखंड को हर हाल में ग्रीन बोनस मिलना चाहिए।

'पंजाब केसरी/नवोदय टाइम्स' से बातचीत में उन्होंने कहा कि देश ही नहीं, बल्कि एशिया के पयार्वरणीय संतुलन में उत्तराखंड का बड़ा योगदान है। यहां पर साठ फीसदी से अधिक वन हैं।

उत्तराखंड देश को पोषित करता है, लेकिन इसका असर आर्थिक प्रगति पर पड़ता है। वैसे भी यह व्यवस्था है कि जिस प्रदेश में जितना अधिक वन व वन संपदा हो, उसे उतना अधिक प्रोत्साहन मिलेगा। वह बोले कि इसके लिए नीति आयोग को कारगर योजना तैयार करनी चाहिए। इस मामले में वन एवं पयार्वरण मंत्रालय की भूमिका है। लेकिन, ठोस काम वित्त मंत्रालय व नीति आयोग को करना है। हम इस सिद्धांत के समर्थन में हैं।

एक सवाल के जवाब में उन्होंने कहा उत्तराखंड के पर्वतीय जिलों के लोगों की आजीविका वन व पयार्वरण से जुड़ी है। अभी इस दिशा में बहुत सीमित काम हुआ है। हमारा फोकस राज्य के बेहद उपेक्षित व गरीब तबके के आर्थिक विकास का होना चाहिए। इसके लिए बहुस्तरीय काम करने की दरकार है। लेकिन, इस सबमें भारी निवेश की आवश्यकता होगी। अगर वन संपदा बढ़ेगी तो मनुष्य पशु संघर्ष कम हो सकेगा।